an>

Title: Need to regularise the services of para teachers in Jharkhand and also enhance their honorarium.

श्री रवीन्द्र कुमार पाण्डेय (गिरिडीह) ः आज देश में निजी विद्यालयों की संख्या बढ़ रही है, परन्तु हम सरकारी शिक्षण संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में कामयाब नहीं हो रहे हैं। परन्तु कुछ ऐसी व्यवस्था है जिसे हम अपग्रेड करके शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। वर्तमान में झारखण्ड में लगभग 50000 से अधिक पैरा-टीचर बच्चों को शिक्षा देने में कई स्तरों पर कामयाब हो रहे हैं, जो विलेज एजुकेशन कमेटी के नियंत्रण में कार्य करते हैं और झारखण्ड में ऐसे शिक्षकों-विद्यार्थियों का अनुपात 1ः40 है। यानी इन शिक्षकों के सहारे सरकारी विद्यालयों में बच्चों की पढ़ाई हो रही है, परन्तु इनका कोई भविष्य नहीं है। इसलिए पैरा-टीचर्स की परेशानियों को आपके समक्ष रखने का प्रयास कर रहा हूँ। समय-समय पर इस प्रदेश में पैरा शिक्षकों द्वारा अपनी मांगों को लेकर आन्दोलन किए गए और आज की तारीख में न तो उनकी भविष्य निधि की कटौती होती है न उनको बीमा पॉलिसी मिलती है, न ही छुट्टी ग्रांट होती है और न ही समय पर मानदेय का भुगतान होता है। कमोबेश इन्हीं पैरा-टीचर्स के बल पर पूरे झारखण्ड में शिक्षा व्यवस्था चल रही है। हमारे पास संसाधनों की कमी जरूर है, परन्तु हमें गुणवत्ता पर भी ध्यान देना होगा। ऐसी स्थिति में पैरा-टीचर्स की सेवाएं नियमित करने के पश्चात् हम झारखण्ड या देश में नियमित शिक्षा व्यवस्था की ओर अग्रसर होंगे।

अतः केन्द्र सरकार से मेरा आग्रह होगा कि पैरा-टीचरों को स्थायी करते हुए उनके मानदेय में बढ़ोत्तरी की जाए।